

॥ उत्तम त्याग ॥



"शैतन्य धाम"

भारतनु गौरवतु तीर्थ स्थान

॥ शैतन्य शैतन्यतु रामधाम



श्री उत्तम त्याग धर्म पूजन

स्थापना

(छंद-कुण्डलिया)

उत्तम त्याग महान ही है भवदुःख हर्तार।
ज्ञानभाव की भावना देती सौख्य अपार॥
देती सौख्य अपार ज्ञान कैवल्य प्रदाता।
स्व-पर प्रकाशक ज्ञान सदा को उर में आता॥
जो करते हैं ज्ञान प्राप्ति का सतत परिश्रम।
वे ही पाते त्याग धर्म महिमामय उत्तम॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्ग अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्ग अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्ग अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

॥ उत्तम त्याग ॥



भारतजुं गौरवतु तीर्थ स्थान

"शैतन्य धाम"

॥ शैतन्य शैतन्यतु रामबाबु धाम



श्री उत्तम त्याग धर्म पूजन

अष्टक

(छंद-ताटक)

क्षीरोदधि से प्रासुक जल ला प्रभु चरणाग्र चढ़ाऊंगा ।
जन्म-जरा-मरणादि रोग त्रय हरकर शिवपद पाऊंगा ॥
उत्तम त्याग धर्म की महिमा ऋषि मुनि गणधर गाते हैं ।
जो इसको धारण करते हैं महामोक्षसुख पाते हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माज्ञाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि. ।
मेरु सुदर्शन पांडुक वन से चंदन लाऊँ अति शीतल ।
भवज्वाला संपूर्ण बुझाऊँ हो जाऊँ मैं परमोज्ज्वल ॥
उत्तम त्याग धर्म की महिमा ऋषि मुनि गणधर गाते हैं ।
जो इसको धारण करते हैं महामोक्षसुख पाते हैं ॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माज्ञाय क्रोधकषाय विनाशनाय चंदनं नि. ।
विजयमेरु वन भद्रशाल से अक्षत लाऊँ धवलोज्ज्वल ।
अक्षयपद पाऊँगा स्वामी पर विभाव सारे ही दल ॥

॥ उत्तम त्याग ॥



भारतजुं गौरवतु तीर्थ स्थान

"जैतल्य धाम"

॥ जैतल्य जैतल्युं रामल्युं धाम



श्री उत्तम त्याग धर्म पूजन

उत्तम त्याग धर्म की महिमा ऋषि मुनि गणधर गाते हैं ।
जो इसको धारण करते हैं महामोक्षसुख पाते हैं ॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माज्ञाय मानकषाय विनाशनाय अक्षतं नि ।
अचलमेरु के नंदनवन से पुष्प मनोहर लाऊँ मैं ।
कामबाण विध्वंस करूँ प्रभो शीलस्वभाव सजाऊँ मैं ॥
उत्तम त्याग धर्म की महिमा ऋषि मुनि गणधर गाते हैं ।
जो इसको धारण करते हैं महामोक्षसुख पाते हैं ॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माज्ञाय मायाकषाय विनाशनाय पुष्पं नि ।
मंदर मेरु सौमनसवन जा सुचरु बनाऊँ अनुभवमय ।
क्षुधारोग विध्वंस करूँ प्रभु तृप्त स्वपद पाऊँ गुणमय ॥
उत्तम त्याग धर्म की महिमा ऋषि मुनि गणधर गाते हैं ।
जो इसको धारण करते हैं महामोक्षसुख पाते हैं ॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माज्ञाय लोभकषाय विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

॥ उत्तम त्याग ॥



भारतजु गौरवतु तीर्थ स्थान

"शैतन्य धाम"

॥ शैतन्य शैतन्यतु रामबाबु धाम



श्री उत्तम त्याग धर्म पूजन

विद्युन्माली मेरु शाश्वत से मैं रत्नदीप लाऊँ ।
मोहतिमिर मिथ्यात्व नष्ट कर निज कैवल्य स्वनिधि पाऊँ ॥
उत्तम त्याग धर्म की महिमा ऋषि मुनि गणधर गाते हैं ।
जो इसको धारण करते हैं महामोक्षसुख पाते हैं ॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माज्ञाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।
नन्दीश्वर से धर्म धूप ला शुक्लध्यान ही ध्याऊँगा ।
अष्टकर्म संपूर्ण नष्ट कर शिवपद शाश्वत पाऊँगा ॥
उत्तम त्याग धर्म की महिमा ऋषि मुनि गणधर गाते हैं ।
जो इसको धारण करते हैं महामोक्षसुख पाते हैं ॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माज्ञाय विभावपरिणति विनाशनाय धूपं नि. ।
कुण्डलवर ग्यारहवाँ द्वीप मनोहर सुन्दर मनभावन ।
फल लाऊँ प्रभु चरण चढ़ाऊँ महामोक्ष पाऊँ पावन ॥
उत्तम त्याग धर्म की महिमा ऋषि मुनि गणधर गाते हैं ।
जो इसको धारण करते हैं महामोक्षसुख पाते हैं ॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माज्ञाय महामोक्षफलप्राप्ताय फलं नि. ।

॥ उत्तम त्याग ॥



"शैतन्य धाम"

भारतनु गौरवतु तीर्थ स्थान

॥ शैतन्य शैतन्यतु रामायण धाम



श्री उत्तम त्याग धर्म पूजन

द्वीप रुचकवर जाऊँ अर्घ्य बनाऊँ गुणमय ज्ञानमयी ।
पद अनर्घ्य पाऊँ हे स्वामी पाऊँ पद निर्वाणजयी ॥
उत्तम त्याग धर्म की महिमा ऋषि मुनि गणधर गाते हैं ।
जो इसको धारण करते हैं महामोक्षसुख पाते हैं ॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माज्ञाय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्य नि. ।

अर्घ्यावलि

(छंद-चौपाई)

कामदेव सम देह मनोहर । पुण्योदय पायी बहु सुन्दर ।
इस जड तन से ममत्व त्यागो । उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री तनममत्वत्यागधर्माज्ञाय अर्घ्य नि. ।
माता रज से जड़तन पाया । गर्भवास में बहु दुःख पाया ।
माता से भी ममत्व त्यागो । उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥२॥
ॐ ह्रीं श्री जननीममत्वत्यागधर्माज्ञाय अर्घ्य नि. ।

॥ उत्तम त्याग ॥



भारतनु गौरववंतु तीर्थ स्थान

"शैतन्य धाम"

॥ शैतन्य शैतन्यवंतु रामधाम



श्री उत्तम त्याग धर्म पूजन

पिता वीर्य से जन्मे हो तुम। काल बहुत तक संग रहे तुम।

पिता ममत्व पूर्णतः त्यागो। उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री पितृममत्वत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं नि.।

पुण्योदय से शुभ सुत पाया। पापोदय से पुत्र विलाया।

पुत्र ममत्व शीघ्र ही त्यागो। उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री पुत्रममत्वत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं नि.।

राज्यपाट भाग्य से पाया। रक्षा में ही समय गंवाया।

राज्यपाट का ममत्व त्यागो। उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री राज्यममत्वत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं नि.।

रत्नस्वर्ण आदिक धन पाया। उत्तम वाहन सुख भी पाया।

धन वाहन का ममत्व त्यागो। उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री धनवाहनादिममत्वत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं नि.।

॥ उत्तम त्याग ॥



भारतजुं गौरवतु तीर्थ स्थान

"शैतन्य धाम"

॥ शैतन्य शैतन्यतु रामधाम



श्री उत्तम त्याग धर्म पूजन

रंभा जैसी नारी पायी। भोगे भोग बहुत दुखदायी।
स्त्री से ममत्व सब त्यागो। उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीममत्वत्यागधर्माज्ञाय अर्घ्यं नि.।

परिजन संगी साथी सुत घर। सभी मनोरंजन हैं नश्वर।
गृह कुटुम्ब का ममत्व त्यागो। उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री गृहकुटुम्बममत्वत्यागधर्माज्ञाय अर्घ्यं नि.।

चऊ कषाय हैं बहु दुखदायी। इसकारण भव पीड़ा पायी।
चऊ कषाय का ममत्व त्यागो। उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री कषायभावत्यागधर्माज्ञाय अर्घ्यं नि.।

पुत्रादिक से राग-द्वेष बहु। उनके कारण दुख पाये बहु।
राग-द्वेष का ममत्व त्यागो। उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री राग-द्वेषत्यागधर्माज्ञाय अर्घ्यं नि.।

माता पिता सुत पत्नी आदिक। दुखदाता हैं ये सर्वाधिक ॥
सब प्रकार का ममत्व त्यागो। उत्तम त्याग धर्म अनुरागो ॥११॥

ॐ ह्रीं श्री समस्तममत्वत्यागधर्माज्ञाय अर्घ्यं नि.।

॥ उत्तम त्याग ॥



"शैतन्य धाम"

भारतनु गौरवतु तीर्थ स्थान

॥ शैतन्य शैतन्यतु रामबाबु धाम



श्री उत्तम त्याग धर्म पूजन

जयमाला

(छंद-पंचचामर)

समस्त पर विकल्प त्याग शुद्ध आत्मवान बन ।
समस्त रागभाव त्याग चिर-स्वरूपवान बन ॥
समस्त मोह जाल छिन्न-भिन्न कर महान बन ।
समस्त ज्ञान का समुद्र आत्म-धर्मवान बन ॥
स्वरूप में अचल सदा स्वध्यान में प्रवीण हो ।
प्रचण्ड शक्ति पुंज तू निजात्म में विलीन हो ॥
राग-द्वेष मोह पुण्य-पाप से विहीन हो ।
परम अनंत दर्श-ज्ञान-वीर्य-सुख अधीन हो ॥
समस्त कर्म शक्तियाँ तुझे ढिगा न पाएंगी ।
समस्त कार्माण वर्गणा ढिगा न पाएंगी ॥

॥ उत्तम त्याग ॥



भारतजुं गौरववंतु तीर्थ स्थान

"जैतण्य धाम"

॥ जैतण्य जैतण्यवंतु रामचंद्र धाम



श्री उत्तम त्याग धर्म पूजन

समस्त ऋद्धि सिद्धियाँ तुझे लुभा न पाएंगी ।
समस्त मंत्र शक्तियाँ तुझे झुला न पाएंगी ॥
समस्त शान्ति सौख्य शक्ति का समुद्र तू महान ।
तीनों लोक तीनों काल में सदैव है प्रधान ॥
तेरे अन्तरंग में है मुक्ति का महा विहान ।
तू ही सिद्ध तू ही बुद्ध तू ही ज्ञानपति महान ॥

(छंद सोरठा)

उत्तम त्याग महान अंगीकृत कर लो सहज ।
यही शान्ति का मूल परम सौख्यदाता सदा ॥

आशीर्वाद

(छंद-सोरठा)

उत्तम त्याग महान मैंने पूजा हे प्रभो ।
धारूँ धर्म स्वरूप स्व-पर विवेक जगा हृदय ॥

इत्याशीर्वाद:

जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माज्ञाय नमः ।